`प्रगतिवादी कवि नागार्जुन `

प्रा.डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक , अध्यक्षा - हिंदी विभाग, मा.ह.महाडिक महाविद्यालय, मोडनिंब
ता.माढा जि.सोलापुर.

प्रस्तावना:-

नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार कवि माना जाता है | वे हिन्दी साहित्य की सबसे अमूल्य निधि है| उनकी पैठ ऊँची अट्टालिकाओं से दूर दराज बसे गाँवों की चॉपालों और झोपडियों तक रहीं | नागार्जुन ने जीवन को उसके विविध रुपों में जटिल संघर्षो को राजनीतिक विकृतियों को, मजदूर आन्दोलनों को, किसान-जीवन के सामान्य सुख-दुख को पहचानने और अभिव्यक्त करने का बृहत्तर सर्जनात्मक उत्तरदायित्व अपने कंधो पर उठाया है | जिस प्रकार उनकी काव्य संरचना और कथ्य के स्तर पर वैविध्य है, वैसा ही वैविध्यमय उसका जीवन भी रहा है | ये वैविध्यपूर्ण होने के साथ साथ बहुत ही व्यापक एवं विराट भी है |

नागार्जुन - एक परिचय

मैथिली और हिन्दी साहित्य पर समान अधिकार रखने वाले वैद्यनाथ मिश्र अर्थात् नागार्जुन का जन्म जून १९११ में हुआ | इनके पिता का नाम प.गोकुल मिश्र एवं माँ का नाम श्रीमति उमादेवी था | प्राचीन मिथिला के दरभंगा से कुछ दूर पूरब में `तरौनी ` गाँव इनकी जन्मभूमि है | पूर्वजों से यजमानी और पुरोहिती का काम इनके यहाँ चहा आ रहा है | जहाँ अब इनके ज्येष्ठ पुत्र शोभाकान्त मिश्र रहते हैं |

``पैदा हुआ था मैं, दीन-हीन अपठित
किसी कृषक कुल में |
आ रहा हूँ पीता ! अभाव का
आव ठेठ बचपन से |

विनोदी स्वभाव, फक्कडापना, अंदाज, एकहारा बंदन, सस्ता खादी या `कुर्ता पैजामा, सामान्य कद, आँखो पर चश्मा, पैरों में चप्पल` , जोशीला मुखमुद्रा वाले कबीर की भाँति मस्तमौला पीडित जनों के कष्टों से व्यथित, मैथिल औधड स्वत: के प्रति लापरवाह किन्तु समाज के लिए जागरुक, शोषित, असहाय जनता के प्रति संवेदनशील, व्यक्ति का नाम है नागार्जुन | नागार्जुन के बारे में केदारनाथ सिंह जी का कथन है - ``उनके पास अनुभव और विचार की वह स्वर्जित भूमि है, जहाँ से वे प्रहार करते है, और हर बार जब वे प्रहार करते है तो कुछ-न-कुछ बहुत मूल्यवान दाँव पर लगा होता है जिसे वे हर कीमत पर बचा लेना चाहते है | अक्सर जो दाँव पर लगा होता है वह है इस देश का सबसे पीडित जन``|

नागार्जुन का रचना संसार :

विजय बहादुर सिंह जी लिखते है - भवानी प्रसाद मिश्र और नागार्जुन मेरे प्रिय कवियों में रहे है | कहने और सोचने के ढंग से लेकर उठने-बैठने के अपने सहज देशी ढंग के चलते | मध्यवर्ग की तमाम प्रचलित और जानी पहचानी मुद्राओं से अलग | ये लोग सिर्फ लिखते ही नही थे,लिखे को जीते भी थे | आग में कूदने का कोई मौका आया तो उसमें कूद भी जाते थे |

एक ऐसे कविता समय में जहाँ सब सिध्दान्तवादी सृजन में अनुशासित शिल्पियों की तरह जुटे हुए हो, नागार्जुन ने ऐसे अनुशासनों को अंगूठा दिखाते हुए वे नई मर्यादाए रची है जिनसे ठस्स होती रचनाशीलता बेदखल हो सकी है | अपने चुनौतीपूर्ण सृजन से वे यह बता सके है कि कवि की आधार पहचान सिध्दान्तों का विनिवेशन नहीं, लोकानुभवों का भाषानुवाद करना है और लोकानुभव कभी भी प्रायोजित नहीं किए जा सकते| यह नागार्जुन जैसे कवियों को पढते हुए ही जाना जा सकता है कि कविता सचेत दुनियादारी की कमाई नहीं है वह तो समय और सृष्टि की आत्मा की सामूहिक पुकार है | नागार्जुन से ठोस जीवन-संदर्भो को सटीक अभिव्यंजता देकर ऐसा वातावरण रचना कि कविता, भाषा परंपरा और लोक समाज पास-पास आ सकें | उनकी नवीनता और प्रयोगशीलता उस निगाह में है जो कविता और जीवन की परस्परता और एकता में विश्वास करती है | कविता को जीवन का अनुवाद मानती है और बुनीयादी जीवन संघर्षो को कविता का प्राण समझ ाती है |

नागार्जुन की काव्य चेतना :

नागार्जुन के काव्य का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि उनकी कविता स्थान विशेष की कविता न होकर पूरे हिन्दी प्रान्त की और पूरे देश की कविता है | वे मूलत: मैथिली भाषी है | उनकी अधिकांश काव्य खडीबोली हिन्दी में है | खडीबोली ऐतिहासिक कारणों से जनपदीय बोली से उपर उठकर पूरे हिन्दी प्रांत की जातीय भाषा के आसन पर पहुँच गई है | उनके काव्य के आस्वाद में विविधता है | काव्य भाषा में भी विविधता है | नागार्जुन के जीवन के अनुभवों में विविधता है | उनकी काव्य चेतना का पहला संघर्ष धर्म की जकडबंदी के खिलाफ चला | उनका मानवतावाद एक तरफ वैज्ञानिक चिंतन की ओर अभिमुख है और दूसरी तरफ समाज के

अंतविरोधों के खिलाफ एक सजग रचनाकार की तीव्र प्रतिक्रिया से संबंध है | डॉ.रामविलास शर्मा ने लिखा है - ``नागार्जुन जितने क्रान्तिकारी सचेत रूप से है, उतने ही अचेत रूप से भी है |`` यह सचेत व अचेत बोध जनता के साथ अभिन्न रूप में जुडा है |

नागार्जुन की जातीय भावना और राष्ट्रीय चेतना उनके श्रमिक वर्गीय दृष्टिकोण पर आधारित है अत: उनके काव्य में मजदूर किसान के सांस्कृतिक जीवन के तत्व पुष्कल रूप में मौजूद है | उनकी जिंदादिली का दूसरा स्तर है कठिन परिस्थितियों में अडिंग साध्य और धैर्य का | उनका यह गुण भी जनता के प्रति उनके अगाध प्रेम और विश्वास का परिणाम है | किसान कुल में जन्म लेने कवि का प्रकृति से अंतरंग परिचय और सघन लगाव हो यह स्वाभाविक है | उनके काव्य विवेक का क्रान्तिकारी पहले यह है कि वे प्रेम और देशप्रेम को काव्य विषय बनाकर दोनों में रागात्मकता स्थापित की है |

नागार्जुन के काव्य चेतना में जनता के जीवन से उनका सक्रिय और अटूट बात है, समाजवाद के महान ध्येय के प्रति समर्पित अपने संघर्षो में उन्हें आस्था है, जनता के कर्म, संघर्ष और परिवर्तन की क्षमता पर उन्हें भरोसा है और व्यंग्य की तीखी धार में जीवन तत्व का बोध है | उनका स्त्री विमर्श बहुत आधुनिक नहीं प्रतीत होता और कवि ने जीवन और साहित्य दोनों में ही स्त्री चेतना को विकसित करने का प्रयास किया है|

जनवादी काव्यधारा के लोकधर्मी कवि नागार्जुन :

आलोचक डॉ.रेवती रमण लिखते हैं, बीसवीं सदी की यथार्थ कविता-कला को नागार्जुन ने सबसे आगे बढकर जनोन्मुख और लोकप्रिय बनाया | उनकी पहिचान एक जनकवि के रूप में बनी | मिथिल जनपद के विद्यापति के बाद वे दूसरे सबसे बढे कवि है | एक दृष्टि से वे प्रेमचन्द और निराला से भी आगे थे | नागार्जुन अपनी व्यंग्यपरक राजनीतिक कविताओं तथा अपनी सर्वहारा वेशभूषा और जनवादी छवि के कारण लोकप्रिय है |नागार्जुन का व्यक्तिगत परिचय का क्षेत्र भी अपार है | वे संबंधों की रक्षा और निर्वाह भी अच्छी तरह करते है | उनकी कविता उनके समय की घटनाओं का ऐतिहासिक दस्तावेज है | व्यंग्य विधा नागार्जुन को स्वभावत: प्राप्त है | नागार्जुन जैसा मुँहफुट और विलक्षण कवि हिन्दि जगत में न दूसरा हुआ है और न होगा | उनके सामने जो चीज दिखाई देती है वह कविता बन जाती है | बडा अद्भुत है उनका रूप | ठेठ सर्वहारा जैसा | वे जनवादी काव्यधारा के अग्रिम कवि है | बाबा का जीवन नाना प्रकार की कविताओं से ओतप्रोत रहा है | उनमें ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समय के तकाजों को देखा जा सकता है | बाबा ने जनवादी सरोकारों के हितार्थ सत्ताधीशों को नंगा किया, उनके पाखंडपूर्ण जीवन की धज्जियाँ उडाई, आन्दोलन को समझाने उनके शिविरों में गए | बाबा ने बहुत सी छोटी-छोटी कविताएँ लिखी है जो भाषा और शिल्प की दृष्टि से बेजोड है | बाबा ने आजीवन कविताएँ लिखी है |

प्रगतीवाद के मसीहा नागार्जुन :

बिहार की धरती ने ऐसे अनेक साहित्यकारों को जन्म दिया है जिन्होंने भारतीय एवं विदेशी साहित्य के बीच सेतु बनकर फासले को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | सुविख्यात साहित्यकारों के बीच संघर्षशील साहित्यकार बाबा नागार्जुन प्रगतीवाद के मसीहा के रूप में स्थापित माने जाते रहेंगे | नागार्जुन मूलत: ग्रामीण संस्कारों के कवि थे | वे प्राय: इधर-उधर भटककर पुन: गाँव लौटते थे और गाँव के रसगंध-स्पर्श से प्राणों को पुलकित करते-रहते, उनकी कविता में मुखरित हो उठा है |

हिन्दी साहित्य में नागार्जुन ही ऐसे जीवत कवि दिखते है, जिन्होंने कविता को एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर सामाजिक विषमता और असंगति पर करारी चोट की है | वे कभी तो सीधे-सीधे आक्रोशी मुद्रा में प्रहार करने वाले कवि नजर आते है, तो कभी तेवर बदल कर व्यंग्य करते दिखाई पडते है |

उनकी कवितांओं के महत्व रेखाकित करते हुए डॉ.रामविलास शर्मा कहते है - नागार्जुन के लोकप्रियता और कलात्मक सौन्दर्य के संतुलन और सामंजस्य की समस्या को जितनी सफलता से हल किया है, उतनी सफलता से बहुत कवि-हिन्दी से भिन्न भाषाओं में भी हल पर पाए है |

नागार्जुन के उपन्यासों में लोक तत्व :

``मेरे विचार को, जो अपनी आदिम स्थिति के संस्कारों से युक्त है, लोक की संज्ञा से अभिहित किया जाना चाहिए | सर्व साधारण के रीति रिवाज, संस्कार, अंधविश्वास एवं लोक भाषा, लोक तत्व कहलाते है |``

मिथिला के ग्रामीण जन अपने संस्कारों, रीति रिवाजों एवं व्रत-पर्व-त्योहारों में अत्यंन्त आस्था रखते है | विवाह के विवाह में जो खास रीति प्रचलित है उसका बारीकि से उनके उपन्यासों ने जगह पाया है | ताड के लम्बे पत्ते पर लाल स्याही से लिखकर भेजी जाने वाली लग्न पत्रिका जैसे कई छोटी-छोटी बातों का जिक्र हुआ है | दिवाली, कृष्ण जन्माष्टमी, दुर्गापूजा,भैया-द्वज, देव उठान, तीन आदि का वर्णन उनके उपन्यासों में मिलता है | मिथिलांचल में दो सर्वाधिक प्रथाएँ प्रचलित है जैसे ब्राह्मणों पंजी, बिकौआ, खबास प्रथा, गौना,बिलौकी प्रथ, शगुन, अपशकुन, मंत्र-तंत्र, कमला नदी के प्रति श्रध्दा, काली की पुजा, लोक गीतों का समावेश उनके उपन्यास को और सजीव बनाती है | `वरुण के बेटे` उपन्यास में भोला गाता है ङ

``भंगुरी को मांत करती है मेरी प्यारी
वोरंगत और वो चिकनापन
कहाँ से लाएगी भंजुरी बेचारी
मात करती है भंगुरी को मेरी प्यारी
मेरी जान ! मेरी जान ! मेरी जान
निछावर है तुझ पर भोला के परान !``

नागार्जुन के उपन्यासों में लोक तत्वों का पर्याप्त योगदान रहा है | प्रेमचन्द के बाद नागार्जुन ही एक ऐसे उपन्यासकार है जिन्होने गतम्य समाज और संस्कृति के चित्रण को ही अपने उपन्यासों के मूल वर्ण्य एवं विवेच्य विषय के रूप में चुना है | प्रेमचन्द का योगदान एवं नागार्जुन का `बलचनमा` समतुल्य है | ``गोदान के होरी और `बलचनमा` की तुलना करते हुए डॉ.मदन लिखते है -``होरी किसान है `बलचनमा` भी | होरी ग्रामीण संस्कृति के ध्वंस की सूचना देता है और बलचनमा उसके भावी निर्माण की | होरी का निराशावादी दृष्टि बलचनमा की आशावादी दृष्टि में बदल जाती है, जिसके लेखक की आस्था का परिचय मिलता है |``

ग्राम परिवेश का उसकी समग्रता के साथ प्रस्तुतीकरण, भारतीय किसान-मजदूर वर्ग के जीवन का स्पन्दन, उनका संत्रास, जीवन-व्यापी संघर्ष और नित्या निरंतर विकासोन्मुखी उनकी चेतना का यथार्थपरक और मर्मस्पशी चित्रण करने वाले उपन्यासकारों में नागार्जुन का अन्यतम् स्थान है | उनके उपन्यासों को भारतीय ग्रामांचल की क्रान्ति चेतना और लोक तत्व बोध के विकास के प्रामाणिक दस्तावेज कहा जा सकता है|

उपसंहार :

आधुनिक हिन्दी कविता के शक्तिशाली हस्ताक्षर, आत्मीयता की सुदृढ भावना के कारण हिन्दी जगत में बाबा के नाम से पुकारे जाने वाले नागार्जुन ने यद्यपि उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत तथा साक्षात्कार भी लिखे है लेकिन मूल रूप से उनकी पहचान एक कविता के तौर पर ही कायम है | नागार्जुन की कविता साधारण व्यक्ति के मन में उतरकर उसके मनोभावों तथा संवेदनाआं को अपने भीतर आत्मसात करके इस ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करती है कि पाठक के हृदय को छूकर उसके सामने एक लम्बी सोच खडी कर देती है | इसका कारण यह है कि नागार्जुन ने अपने घर में बैठकर शोषित आम आदमी की करुण कथा नहीं सुनी है बल्कि वे स्वयं उन यातनाओं को जीते भोगते रहे हैं, जो व्यवस्था ने भारतीय सर्वहारा की नियति बना रखी है | वे एक प्रतिबध्द कवि थे और इस प्रतिबध्दता को खुलकर उन्होंने स्वीकार किया है |

नागार्जुन ने अपना सारा लेखन चार भाषाओं में किया है - संस्कृत, मैथिली, हिन्दी और बंगला उनकी अधिकांश कविताएँ बोलचाल की भाषा और बातचीत की रौ में लिखी गई है | बारीक से बारीक और मोटी से मोटी कलम उनके पास है | वे वस्तुतः आधुनिक जीवन के कवि है | प्रगति की अधूरी, एकाँकी और संतुलित धारणा हमें मिलती है | लोक की पीडा और सामाजिक क्षोभ की उसके लेखन के प्रधान अनुभव है | उनका लेखन श्रमिक जनता की ओर से किया गया वह शब्दमेघ है जिसमें जड पुरानतनता और बृहद जर्जर सामन्तवाद को आहुति दी जाकर जनवादी चेतना की दिग्विजय की घोषणा की गई है | उनके पास एक स्वस्थ दिमाग और आग्रहमुक्त दृष्टि है | जिस पर किसी भी मतवाद या साहित्यिक सम्प्रदाय की संकीर्णता हावि नहीं हो सकी है | नागार्जुन का कृतित्त्व इसी कालातिशयी मान तत्व की अंतर्निहित उल्लसित तरंगों की खोज यात्रा है | टेलीप्रिंटर की तरह जो जनता के मनोभावों के प्रत्येक्ष क्षण को टंकित करता रहा, जिसने अपनी व्यक्ति पीडा को छिपाए रखा और लोक के सुख-दुख को ही परम सत्य समझा, उसी का नाम नागार्जुन है |

सहायक ग्रंथ सूची

१. नागार्जुन का रचना संसार-विजय बहादुर सिंह
२. नागार्जुन की काव्य यात्रा एक विश्लेषण - डॉ.रतन |
३. नागार्जुन मेरे बाबूजी - शोभाकान्त |
४. समाजवादी यथार्थवाद और नागार्जुन का काव्य-प्रेमलता दुआ|
५. नागार्जुन की सामाजिक चेतना - प्रो.प्रणय |
६. नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी |